टी बी के कुछ सच

- टी बी छूत का रोग है तथा विश्व की सबसे घातक छूत की बीमारी है
- यह भारत में जन साधारण की समस्या बनी हुई है
- टी बी मुख्यतः फेफड़ों में होती है
- यह हवा के द्वारा फैलती है

टी बी के लक्षण

- दो सप्ताह या उससे अधिक समय तक लगातार खांसी रहना
- बलगम में खून आना
- शाम को बुखार का बढ़ना
- वजन घटना, छाती में दर्द
- रात में पसीना आना
- थकान होना,सांस लेने में कठिनाई
- गर्दन में सूजन या गांठें

गुप्त (लेटेंट) टी बी क्या है ?

- टी बी के कीटाणु का सोये हुए रहना
- व्यक्ति बीमार नहीं होता
- दूसरों को संक्रमित नहीं कर सकता
- इस टी बी की जांच के लिए खून या चमड़ी की जांच जरूरी है

सक्रिय टी बी (एक्टिव TB) क्या है ?

- शरीर के किसी भी हिस्से में टी बी के कीटाणु फ़ैल सकते हैं
- व्यक्ति बीमार महसूस करता है

- व्यक्ति दूसरों को बीमारी फैला सकता है
- बलगम की जाँच/छाती के एक्सरे से टी बी का पता लगाया जा सकता है

निक्षय पोषण योजना (N P Y)

- यह भारत सरकार की एक योजना है
- इसका उद्देश्य टीबी के मरीजों को आर्थिक सहायता प्रदान करना है ताकि वे अच्छा भोजन खा सकें ।
- जब तक मरीज का उपचार चलता है तब तक टीबी के प्रत्येक मरीज को 1000/- रुपये प्रति माह की आर्थिक सहायता सरकार की तरफ से दी जाती है
- सभी टीबी के मरीज इस सहायता के योग्य हैं।
- आर्थिक सहायता सीधे मरीज के बैंक खाते में भेज दी जाती है
- इसका उद्देश्य उपचार के परिणामों में सुधार लाना
- टीबी से संबंधित स्वास्थ्य चुनौतियों को कम करना है

डॉट्स प्रणाली

- डॉट्स दवा प्रतिरोध को रोकती है
- डॉट्स जटिलताओं को रोकती है
- डॉट्स अपनाने से गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का जोखिम कम हो जाता है
- डॉट्स प्रणाली प्रभावी चिकित्सा सुनिश्चित करती है
- डॉट्स दवा के प्रभाव को बढाती है
- डॉट्स मृत्यु दर को कम करती है
- डॉट्स टी बी को फैलने से रोकती है

टी बी का निदान

- रोगाणुओं की जाँच : ए एफ बी (AFB)/ सी बी नॉट CBNAAT) परीक्षण द्वारा
- आणविक निदान : प्रयोगशाला में डी एन ए (DNA) या आर एन ए (RNA) का विश्लेषण करके किसी भी बीमारी या संक्रमण का निदान किया जाता है
- त्वचा परीक्षण से पता चलता है कि आपके शरीर में टी बी के कीटाणु हैं या नहीं
- छाती का एक्सरे और सी टी स्कैन द्वारा

सामाजिक धब्बा

- टी बी के मरीजों से भेद-भाव किया जाता है
- बीमारी फैलने के डर से उन का सामाजिक बहिष्कार किया जाता है
- समाज के डर से मरीज समय से अपना इलाज नहीं करवा पाता है
- ग़लतफ़हमी के कारण रोज़गार और रिश्तों पर असर पड़ता है
- "गन्दा " या रोगग्रस्त होने की ऐतिहासिक धारणाओं से संबद्ध
- टी बी गरीबी से जुड़ी हुई है